शालेय प्रभावशीलता अध्ययन

School Effectiveness

वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता, उपलब्धि एवं जवाबदेहिता के संदर्भ में प्रभावशाली व अप्रभावशाली शालाओं में वर्गीकरण एवं चर्चा एक मुख्य मुद्दा रहा हैं।

प्रश्न यह उठता है कि किस शाला को प्रभावशाली कहा जाय, इसका ब्तपजमतपं मापदण्ड क्या हों ? क्या शाला की प्रभावशीलता विद्यार्थी उपलब्धि ही हैं ? यह शोध पिछले कुछ वर्षों से प्रमुखता से किया जा रहा हैं। इन शोधों से निम्न बातें सामने आई हैं :–

- मुख्य घटक जो शालेय प्रभावशीलता को निर्धारित करते हैं, वह संज्ञानात्मक कौशल ही हो, या सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांवेगिक, सांस्कृतिक कौशलों को भी शामिल किया जाय?
- शाला को प्रभावशाली क्यों व किसके लिए होना चाहिए?
- शोध हेतु तात्कालिक मापदण्डों के साथ–साथ Longitudinal आंकड़े प्राप्त करना आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गुणावत्तापूर्ण शिक्षा के साथ–साथ प्रभावशाली व समान शिक्षा सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से पहुचाना भी एक चुनौती हैं। इस संबंध में शिक्षाविदों, प्राचार्य, शिक्षक व विद्यार्थी वर्ग को समान सहभागिता व जवाबदेही तय करना आवश्यक होगा। शाला के प्रत्येक घटक में व्यापकता, विस्तार, उपयोगिता एवं जवाबदेहिता निर्धारित कर ही हम शाला को प्रभावशाली बना सकते है। शालेय प्रभावशीलता शैक्षिक

क्रियाकलापों की गुणवत्ता को दर्शाती हैं। जो विद्यालय का समाज में महत्व व स्तर निर्धारित करती हैं।

प्रभावशीलता का अर्थ –

प्रभावशीलता अर्थात वांछित उपयोगिता

शिक्षाविद्ो द्वारा विद्यार्थी के मापने योग्य परिणामों (Measurable Student Outcomes) अर्थात उत्पाद (Product) को शालेय प्रभावशीलता का मुख्य आधार माना हैं।

शालेय प्रभावशीलता के आयाम (Dimensions of School Effectiveness) –

कुछ शिक्षाविदों ने शालेय प्रभावशीलता के निम्न 6 आयाम बताए हैं –

1. Learning
2. Teaching
3. People Management
4. Leadership & governance
5. Achievement
6. Social Placement

कुछ शिक्षाविदों ने शालेय प्रभावशीलता के निम्न 3 आयाम बताए हैं –

1. Input - Financial, Personnel (teacher, student, principal), Facilities, Equipments, Material, school policy/law etc.
2. Process - Curriculum, Instructions, Methods, Individual difference, Parent-teacher relation, Leadership etc.

3. Output - Attendance, Achievement, Retention, drop-out rate, School safety, Discipline, enrollment, placement etc.

कुछ शिक्षाविदों ने शालेय प्रभावशीलता के निम्न 4 आयाम बताए हैं –

1. पहचान Identification
2. पुरस्कार व दण्ड Reward and Punishment
3. सामाजिक स्वीकृति Social Acceptance
4. निरन्तरता Maintenance

उदाहरण – भारत देश के राजस्थान राज्य के कोटा क्षेत्र की शैक्षिक संस्थानों को IIT Hub के रूप से जाना जाता है।

निष्कर्ष – शाला की उपयोगिता एवं महत्व के आधार पर समाज व क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त होता हैं। जो सामाजिक सहभागिता एवं आर्थिक सहयोग के अवसर प्रदान करती है। शालेय प्रभावशीलता के आधार पर विशिष्ट क्षेत्र की पहचान बनती है। जो समाज व देश के सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास में सहायक होती हैं। यह अच्छे से अच्छा प्रदान करने की दिशा में स्वस्थ प्रतियोगिता भी उत्पन्न करती हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा से जुड़े सभी Stakeholders इस प्रकार की शालेय संस्कृति का निर्माण करें, जो बालक के संपूर्ण विकास के साथ–साथ देश व समाज की आवश्यकताओं, सिद्धांतो व मूल्यों का भी पोषण करें।

Key Points of School Effectiveness -

- Strong & effective principal Leadership.
- Sustained focus on instruction and learning.
- Safe & positive school climate and culture.
- High expectations for all students & staff.
- Effective Use of Student achievement data.
- Teaching practice & innovation.
- Productive parent involvement.
- Building staff skills.
- Regular monitoring.